वादी, सम्वादी, अनुवादी और विवादी

राग के नियमों में वादी, सम्वादी आदि स्वरों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, जो निम्नांकित श्लोक से प्रकट है :—

वादी स्वरस्तु राजा स्यान्मन्त्री संवादिसंज्ञितः ।
स्वरो विवादी वैरी स्यादनुवादी च भृत्यवत् ॥

अर्थात्—वादी स्वर को राजा के समान, सम्वादी स्वर को मन्त्री के समान, विवादी स्वर को बैरी (दुश्मन) के समान तथा अनुवादी स्वर को सेवक के समान समझना चाहिए ।

वादी : राग में लगने वाले स्वरों में जिस स्वर पर सबसे अधिक ज़ोर रहता है, अथवा जिसका प्रयोग अधिक या बार-बार किया जाता है, उसे उस राग का 'वादी स्वर' कहते हैं ।

Scanned with CamScanner

संवादी : यह वादी स्वर का सहायक होता है, तभी इसे मन्त्री की पदवी शास्त्रों ने दी है। यह वादी स्वर से कम तथा अन्य स्वरों से अधिक प्रयुक्त होता है। वादी स्वर के चौथे या पाँचवें नम्बर पर 'संवादी स्वर' होता है।

अनुवादी : वादी और संवादी के अतिरिक्त जो नियमित स्वर राग में लगते हैं, वे सब 'अनुवादी स्वर' कहलाते हैं।

विवादी : 'विवादी' का वास्तविक अर्थ तो 'बिगाड़ पदा करने वाला' ही होता है, अर्थात् ऐसा स्वर, जिससे राग का स्वरूप बिगड़ जाए। इसीलिए विवादी को शत्रु (वैरी) की पदवी शास्त्रों में दी गई है। इतना सब होते हुए भी कभी-कभी राग में विवादी स्वर का प्रयोग ऐसी कुशलता से कर दिया जाता है, जिससे कि राग में एक विचित्रता पैदा हो जाती है; जैसे यमन राग में दो शुद्ध गांधारों के बीच में शुद्ध 'म' लगा दिया जाता है तो उसका सौंदर्य कुछ बढ़ ही जाता है। इस प्रकार विवादी स्वर का प्रयोग कुशल गायक करते हैं।

Scanned with CamScanner